''हिन्दी कहानियों में वर्णित भारत विभाजन का दर्द''

'डॉ॰ ज्योत्स्ना

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

किशन लाल पब्लिक कॉलेज,

रेवाड़ी (हरियाणा)।

स्वतन्त्रता पूर्व जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी थी उसका समाधान निकालने के लिए तत्कालीन राष्ट्रवादी नेताओं ने अंग्रेजों की कुटील चाल को स्वीकार कर लिया और अविभाज्य भारत को विभाजन की त्रासदी से गुजरना पड़ा। विभाजन के समय लाखों लोगों को अपने प्राण गंवाने पड़े तथा करोड़ों लोगों को सीमा पार जाना पड़ा। 15 अगस्त, 1947 को भारत विभाजन जैसी ऐतिहासिक घटना के लिए किसी एक व्यक्ति, पक्ष या तत्त्व को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। कई कारक इस घटना के लिए उत्तरदायी हैं। भारत विभाजन वस्तुतः अंग्रेजों की कुटिल चाल थी जिसमें नेता और राजनीतिक दल फंसते चले गए। भारत विभाजन इस बात का भी प्रमाण देता गया कि सदियों तक साथ रहने के बावजूद हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों में वह एकता स्थापित नहीं हो पायी थी जिसे साम्राज्यवादी ताकतें तोड़ न पाती।

विभाजन ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र की बड़ी घटना है, इस घटना से व्यापक फलक पर लोग प्रभावित हुए जिस घटना से इतने लोग प्रभावित हुए हों उससे हिन्दी साहित्य तथा साहित्यकार भला कैसे अछूते रह सकते हैं, हिन्दी भाषा ही नहीं बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं पर भी इस घटना का स्पष्ट प्रीााव लक्षि होता है, बांग्ला, सिन्धी, उर्दू, पंजाबी, डोगरी, मराठी इत्यादि भाषाओं में विभाजन को आधार बनाकर साहित्य सृजन किया गया।

विभाजन से संबंधित साहित्य विभाजन के कई वर्षों बाद भी लिखे जाते रहे, क्योंकि विभाजन ऐसी टीस है जो वर्षों बाद तक बनी रही। बहुत से लोग भले ही एक से दूसरे देश जाने को मजबूर हो गये लेकिन अपनी मिट्टी से उखड़ने का दर्द उन्हें ताउम्र टीसता रहा। उर्दू के प्रसिद्ध शायर जोश मलीहाबादी ने रेडियो में एक इंटरव्यू में कहा – '''हम तरस गये उन गलियों को जहाँ कि हम खेलते थे, जहाँ हमारे बुजुर्गों की हड्डियाँ हैं। हम अपने बुजुर्गों के बनाये घरों को तरसते हैं। अगर हम याद में आह भरते हैं तो जुर्म समझा जाता है, गद्दार करार दिये जाते हैं। ये तमाम तबाहियाँ पाकिस्तान बनने से ही तो हुई हैं। उन्होंने देश नहीं बांटा, बल्कि आदमी आदमी को ही बांट डाला।''[1]

हिन्दी कथा साहित्य में विभाजन से संबंधित रचनाओं में पूर्ण रूप से कलात्मक संतुलन तथा वैचारिक निष्पक्षता का ध्यान रखा गया है। वैचारिक रूप से निष्पक्ष साहित्य ही समाज के हितार्थ होता है। प्रमुख रूप से हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म को ही आधार बनाकर साम्प्रदायिक उन्माद फैलाया जाता, लेकिन हिन्दू तथा मुस्लिम भारत की तहजीब व संस्कृति का वह हिस्सा हैं जिन्हें विभाजित नहीं किया जा सकता। विभाजन के समय लाहौर साम्प्रदायिक दंगों की आग में जल रहा था, वर्षों से साथ रह रहे पड़ोसियों का भी विश्वास एक–दूसरे से उठ गया था, हिन्दू तथा मुसलमान दो खेमों में बंट गये थे। अल्पसंख्यक अपनी जान बचाने के लिए एक जगह से दूसरी जगह भाग रहे थे।

विभाजन कालीन दंगों की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानियों में अज्ञेय द्वारा लिखित 'शरणदाता'[2] कहानी इस बात को दर्शाती है कि किस प्रकार विभाजन के कारण उत्पन्न ग्रन्थियों तथा मानसिक विकृतियों को यह कहानी दर्शाती है। इस कहानी में अज्ञेय सिक्ख तथा उसके लड़के के माध्यम से मानव के आदर्श

स्वरूप को प्रस्तुत करे हैं, अज्ञेय दर्शाते हैं कि क्रूरतम परिस्थितियों में भी किस प्रकार सिक्ख ने मानवीय मूल्यों की रक्षा की। वह बुराई का बदला बुराई से नहीं बल्कि अच्छाई से देने के पक्षपाती हैं।

सुरैया जो कि मुस्लिम स्त्री है अपने दो बच्चों तथा सामान के साथ गाड़ी में चढ़ने के पश्चात् उस परवरदिगार को धन्यवाद देती है तभी उसने देखा कि डिब्बे के दूसरे कोने में चादर ओढ़े जो दो आकार बैठे हुए थे वे मुस्लिम नहीं सिक्ख थे, चलती गाड़ी में स्टेशन के प्रकाश से जो झलक दिखायी पड़ जाती थी उन अपलक आँखों में सुरैया को अमानुषिक छाया नज़र आ रही थी, सुरैया ने काल्पनिक दृष्टि से देखा कि उन आँखों में लाल डोरे पड़े हैं। सुरैया के इन भावों से स्पष्ट लक्षित होता है कि तत्कालीन समाज में अविश्वास इस कदर फैला था कि किसी अन्य धर्म के व्यक्ति की उपस्थिति मात्र से मन में दहशत भर जाती थी। प्रेम तथा संवेदना का स्थान नफरत तथा घृणा ने ले लिया था। गाड़ी से सुरक्षित बाहर निकलने की तरकीब सुरैया अभी सोच ही रही थी कि सिक्ख यात्री की बात–चीत के प्रयास से वह चौंक पड़ी तथा उसका डर कई गुना हो गया, लेकिन सिक्ख उसकी सुरक्षा का पूर्ण आश्वासन देता है।

कृष्णा सोबती ने विभाजन से सम्बन्धित कई कहानियाँ लिखी हैं जिनमें 'सिक्ख बदल गया'[3] कहानी सबसे महत्वपूर्ण है, लेखिका ने इस कहानी में संकेतों के माध्यम से विस्थापित व्यक्ति की पीड़ा को दिखाया है, सदियों से साथ रह रहे व्यक्तियों में विभाजन किस प्रकार से साम्प्रदायिक भावनाएँ भर देता है जो मनोविज्ञान को सूक्ष्म दृष्टि से पकड़ा है।

विभाजन के पूर्व जो लोग परस्पर सौहार्द के साथ रहते थे, विभाजन की खबर सुनते ही उनके वार्तालाप तथा क्रिया कलाप में अविश्वसनीय परिवर्तन आ जाता है। साम्प्रदायिकता हावी हो जाती है, व्यक्ति, व्यक्ति न रहकर सम्प्रदाय का प्रतिधित्व करने लगता है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों को यथार्थ के विभिन्न स्तरों पर प्रस्तुत किया है। कुंठा, घुटन, संत्रास तथा रिश्तों में उत्पन्न बिखराव इनकी कहानियों के मुख्य स्वर हैं। साहनी की कहानी 'अमृतसर आ गया'[4] का कथानक 'मैं' है, कथानक 'मैं' के माध्यम से ही कहानी को गति मिलती है तथा वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। कथानक 'मैं' दिल्ली में होने वाले स्वतन्त्रता समारोह को देखने जा रहा है। गाड़ी के डिब्बे में अधिक भीड़ नहीं थी, 'मैं' के अलावा डिब्बे में सरदार जी, तीन पठान व्यापारी, एक दुबला–पतला सा बाबू तथा एक बुढ़िया जिसने अपने मुंह–सिर को ढांप रखा था। गाड़ी में सम्पूर्ण भारत की झलक दिखायी दे रही है, गाड़ी धीमी गति से चल रही थी, डिब्बे के यात्रियों में हँसी–मजाक का दौर चल रहा था। विभाजन लागू होने के तुरन्त बाद से ही परिस्थितियाँ असामान्य हो जाती हैं, लोग आशंकाओं से घिरे रहते हैं। स्थिति पूर्णतः अस्पष्ट है, विभाजन के फैसले ने सम्पूर्ण देश में अनिश्चितता का माहौल बना दिया था। अपनी मिट्टी से जुड़े लोगों ने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन उन्हें अपना घर–बार छोड़कर जाना पड़ेगा। नेताओं के संदर्भ में लोग कयास लगा रहे थे, वो भारत में रहेंगे या भारत छोड़कर पाकिस्तान चले जायेंगे। ''मेरे सामने बैठे सरदार जी बार–बार मुझसे पूछ रहे थे कि पाकिस्तान बन जाने पर जिन्ना साहिब बम्बई में ही रहेंगे या पाकिस्तान में जाकर बस जायेंगे और मेरा हर बार यही जवाब होता 'बम्बई क्यों छोड़ेंगे, पाकिस्तान में आते–जाते रहेंगे, बम्बई छोड़ देने में क्या तुक है।''[5]

'मोहन राकेश' द्वारा लिखी 'मलने का मालिक'[6] कहानी का कथानक विभाजन के साढ़े सात साल बाद के कालखण्ड को दर्शाता है। 'मोहन राकेश' ने विभाजन कालीन घटनाओं का विस्तार से वर्णन नहीं किया बल्कि संकेतों के माध्यम से कथ्य को स्पष्ट किया है। कहानी के अन्तर्गत विभाजन के दूरगामी परिणाम को दर्शाया गया है। विभाजन के फैसले के कारण न चाहते हुए भी मजबूरी में हिन्दू तथा मुसलमानों को अपना बसा–बसाया घर–बार छोड़कर जाना पड़ा था। उन्हें अपने देश, घर, गली, मुहल्ले की

याद आती थी। उन्हें विश्वास था कि उनके घर उसी तरह आज भी सुरक्षित होंगे और लोगों में आज भी वही आत्मीयता होगी। प्रस्तुत कहानी इन्हीं सम्बन्धों का ताना–बाना है।

पाकिस्तान तथा भारत का मैच अमृतसर में होना तय हुआ था। दोनों तरफ की सरकार ने नागरिकों को मैच देखने की अनुमति प्रदान कर दी थी, जिससे वह मैच देखने के बहाने अपने आत्मीय जनों से मिल सकें। पाकिस्तानी लोगों के लिए मैच की अपेक्षा अमृतसर अधिक आकर्षण का केन्द्र था। हर सड़क पर मुसलमानों की कोई न कोई टोली घूमती नज़र आ रही थी। प्रत्येक सदस्य के मन में वही पुराना अमृतसर था वो वहाँ की हर एक चीज को हसरत भरी निगाहों से देखते हैं तथा अपने जाने के बाद हुए परिवर्तनों को देखकर आश्चर्यचकित हैं। तंग बाजारों तथा गलियों से गुजरते हुए वो एक–दूसरे को पुरानी चीजों की याद दिला रहे थे – ''देख, फतहदीना, मिसरी बाजार में अब मिसरी की दुकानें पहले से कितनी कम रह गई हैं। उस नुक्कड़ पर सुक्खी भठियारन की भट्ठी थी, जहाँ अ बवह पानवाला बैठा है... यह नमक मण्डी देख लो, खान साहब!'' [7] इसी टोली में वृद्ध गनी मियां भी शामिल थे, जो विभाजन के समय अपने भरे–पूरे परिवार को छोड़कर लाहौर चले गये थे। उनके पीछे उनके बेटे चिराग, पुत्रवधू तथा दो पौत्रियों की हत्या विभाजन के दंगे में कर दी गयी थी।

महीप सिंह की कहानी 'पानी और पुल' का कथानक विभाजन के चौदह वर्ष के पश्चात् का है। लगभग तीन सौ यात्री लाहौर में गुरुद्वारों के दर्शन के पश्चात् पंजा साहिब की यात्रा के लिए निकलते हैं, यहीं से कहानी का आरम्भ होता है। कहानी का नायक 'मैं' भी इन्हीं यात्रियों में अपनी माँ के साथ उस ओर जा रहा था जिधर उसका गाँव था। कथानक को विगत घटनाएँ याद आ रही थीं– ''उन दिनों पंजाब का विभाजन घोषित हो चुका था, पंजाब की पांचों नदियों का जल उन्माद की तीखी शराब बन चुका था। माँ ने फिर भी पंजाब जाने का फैसला किया था। सभी ने ऐसे विरोध किया जैसे वे जलती आग में कूदने जा रही हो और वह सचमुच आग में कूदने जैसा ही तो था।''[8]

जैसे–जैसे गाड़ी आगे बढ़ रही थी, वैसे–वैसे चौदह साल पहले हुए घटनाओं की भयावहता की आग यात्रियों के चेहरे पर परछाई रूप में उभर रही थी। भारत विभाजन के फलस्वरूप उत्पन्न साम्प्रदायिक समस्याओं ने न सिर्फ आम जन को आहत किया बल्कि साहित्य जगत पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। जिसके परिणामस्वरूप विभाजन की समस्याओं पर आधारित कई कालजयी रचनायें साहित्य जगत को समृद्ध करती हैं। रचनाकारों ने इन समस्याओं को अपने–अपने दृष्टिकोणों से देखने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ :

1. मलीहाबादी, जोश 'भारत विभाजन अभिशाप था, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 4 मार्च, 1979, पृ. 13
2. नरेन्द्र मोहन, भारतीय भाषाओं की कहानियाँ
3. धर्मयुद्ध (4) बीसवीं शताब्दी की हिन्दी कहानियाँ
4. सं0 नरेन्द्र मोहन, भारत विभाजन : हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ
5. वही, पृ. 76
6. वही,
7. वही, पृ. 97
8. वही, पृ. 91